संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

इलाहाबाद संग्रहालय
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
ALLAHABAD MUSEUM
(Ministry of Culture, Government of India)

G20 भारत 2023 INDIA

सांवरी
Sanwari

केश सज्जा पर आधारित प्रदर्शनी
An Exhibition on Hair Dressing

25 सितम्बर 2023 से 25 दिसम्बर 2023

25 September 2023 to 25 December 2023

सांवरी
Sanwari

केश सज्जा पर आधारित प्रदर्शनी
An Exhibition on Hair Dressing

Curated by
Rajesh Prasad

Assisted by
Dr Ajay Kumar Mishra
Dr. Waman A. Wankhede
Dr. Sanju Mishra
Dr. Sushil Shukla

ALLAHABAD MUSEUM
2023

Sanwari

Hair-dressing has been an integral part of Indian culture and civilisation since the beginning of early civilizations like Harappan culture or Indus-Saraswati civilization and beautifying hair in various ways is innate in human nature.

The Harappans were interested in creating unique hairstyles using combs and hair. An excellent example of hair decoration of the Harappan period is the famous bronze statue of a dancing girl found in Mohenjodaro.

The literary citations to the coiffures known to the Vedic are copious. The variety of hairstyles mentioned in the Vedic literature shows the importance given to hair dressing by the people of the period. The Vedic texts frequently mentions words like Opsa, Kaparda, Sikhanda, Kesa, Kurira, Pulasti, Stuka, Shikha, Kumba etc. From these texts, it is very clear that hairstyling was prevalent among both men and women.

In the Opsa style, men gathered their hair towards the top and left it loose enough to give it the appearance of a dome or a ruffled cap. According to Vedic texts, Indra was fond of this Opasa hairstyle. However, when women wore the Opasa hairstyle they would make it look like a covered roof of a house or a thatched net.

Another hairstyle Kaparda was also popular among both men and women. When it was worn by men it always resembled a spiral coil of hair braided and matted at different angles on the top of the head. It is frequently mentioned as worn by Kapardian gods and their followers. Kaparda hairstyle is still donned by many Shaivite denotes.

Kurira may have been an ornament associated with a woman's headdress or a horn-shaped lock that was made possible by the women's long braids. It is important to mention here that this hairstyle is probably still alive among the women living in the areas between the upper Sutlej and the Ganges. Kumba is clearly derived from Khompa, which had a hemispherical or pot-shaped coil at the back of the head. This hairstyle is evidently feminine.

In Atharvaveda and later works Seman refers to the separation of hair. In Yajurveda Samhita, the word Pulasti means plain hair. In Vedic literature, Stuka probably means locks of hair. In the Shatapatha Brahmana, the word 'shikha' refers to the knot of hair

worn on the top of the head and the loose knot of the 'shikha' was a sign of mourning for both men and women.

The five different hairstyles usually mentioned in Sanskrit and Tamil texts include hair in a knot, hair gathered in a bun, hair curled, hair parted and hair plaited. Many hairstyles related to hair decoration like lambatka, praveni, keshpash, pony or pony-tail, pig-tail, curly hair (kuntal kesharashi), bun, veni (braid), etc. are still visible in sculptures, terracotta, painting and literature.

This exhibition titled "Sanwari", which is mainly based on hair dressing, is an endeavor to throw light on the diversity of hair dressing displayed in the terracotta and stone sculptures of Allahabad Museum and popular during the Murya, Shunga, Kushan, Gupta and Chandela periods. All the exhibits put up in this exhibition are from the collection of Allahabad Museum which have been received from various places like Ahichchhatra, Kaushambi, Varanasi, Mathura, Khajuraho, Chandraketugarh etc.

Apart from this, hairstyle has also been shown in this exhibition through modern painting, a wonderful example and centre of attraction of this exhibition, a painting named Sanwari, which is also the title of this exhibition. In the end, it would be appropriate to say that this exhibition justify the uninterrupted continuity of art styles like hairdressing in the intact Indian culture and tradition. The exhibition presents the ancient to modern view points of hair dressing styles in the Indian Culture. As per Vedas, "Healthy skin and hairs are nothing but reflection of a balanced body."

सांवरी

केश–सज्जा, हड़प्पा संस्कृति अथवा सिंधु–सरस्वती सभ्यता जैसी आदि सभ्यताओं के प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का एक अभिन्न अंग रही है तथा बालों को विविध प्रकार से सुंदर बनाना मानव स्वभाव में जन्मजात है ।

हड़प्पा निवासी कंधियों और केशों का उपयोग करके अनोखी केश शैलियां बनाने में रुचि रखते थे। हड़प्पा कालीन केश सज्जा का एक उत्कृष्ट उदाहरण मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांसे से बनी प्रसिद्ध नृत्यांगना की मूर्ति है।

वैदिक कालीन केश विन्यासों के ज्ञात साहित्यिक उद्धरण प्रचुर मात्रा में हैं। वैदिक साहित्य में उल्लिखित केश विन्यासों की विविधता उस काल के लोगों द्वारा केश सज्जा को दिए गए महत्व को दर्शाती है। वैदिक ग्रंथों में प्रायः ओपसा, कपर्दा, शिखंडा, केशा, कुरिरा, पुलस्ति, स्तुका, शिखा, कुंबा आदि जैसे शब्दों का उल्लेख किया गया है। इन ग्रंथों से यह बहुत स्पष्ट है कि केश विन्यास पुरुषों और महिलाओं दोनों ही के मध्य प्रचलित था।

ओपसा शैली में पुरुष अपने केशों को शीर्ष की तरफ एकत्रित करते थे तथा इसे इतना ढीला छोड़ते थे कि इसे एक गुंबद अथवा झालरनुमा टोपी जैसा दिखाया जा सके। वैदिक ग्रंथों के अनुसार इंद्र ओपसा केश शैली को धारण करना पसंद करते थे । जबकि महिलाएं जब ओपसा केश शैली को धारण करती थीं तो वे इसे किसी घर की ढंकी हुई छत अथवा फूस के जाल के समान दिखाती थीं।

एक अन्य केश शैली कपर्दा भी पुरुषों और महिलाओं दोनों के मध्य प्रचलित थी। जब इसे पुरुषों द्वारा धारण किया जाता था तब यह सदैव सिर के सिर के शीर्ष पर अलग–अलग कोणों में गुथे तथा उलझे हुए केशों के एक सर्पिल कुंडल के समान होता था। इसका उल्लेख प्रायः कपर्दियन देवताओं तथा उनके अनुयायियों द्वारा धारण किये जाने के रूप में होता है। हालाँकि, महिलाओं में कपर्दियन शैली ने संभवतः मुकुट जैसा केशविन्यास बनाया होगा। कपर्दियन केशविन्यास अभी भी कई शैव लोगों द्वारा धारण किया जाता है।

कुरीरा संभवतः महिला की शिरोवेशभूषा से संबंधित आभूषण अथवा सींग के आकार की जटा हो सकती थी जिसे महिलाओं की लंबी चोटियों द्वारा बनाना संभव होता था । यहां इस बात का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि ऊपरी सतलज और गंगा के मध्य के क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं के मध्य यह केश शैली संभवतः अभी भी जीवित है। कुम्बा स्पष्ट रूप से कोम्फा से बना है जिसमें सिर के पृष्ठ भाग में अर्धगोलाकार अथवा मटके के आकार का कुंडल होता था। यह केशविन्यास स्पष्ट रूप से स्त्रैण है।

अथर्ववेद और उसकी परवर्ती रचनाओं में सीमन का तात्पर्य बालों को अलग करने से है। यजुर्वेद संहिता में पुलस्ति शब्द का अर्थ सादे केशराशि से है। वैदिक साहित्य में स्तुका का अर्थ संभवतः बालों की लटों से है। शतपथ ब्राह्मण में, शिखा शब्द कसे तात्पर्य सिर के शीर्ष पर पहने जाने वाले केशों की गांठ से है तथा शिखा की ढीली गांठ महिलाओं एवं पुरुषों दोनों के ही संदर्भ में शोक का संकेत थी।

सामान्यतया संस्कृत और तमिल ग्रंथों में उल्लिखित पांच अलग–अलग केश शैलियों में गांठ वाले बाल, जूड़े में एकत्रित बाल, घुंघराले बाल, विभाजित बाल और गुंथे हुए बालों को सम्मिलित किया गया है। लंबटका, प्रवेणी, केशपाश, पोनी अथवा पोनी–टेल, पिग–टेल, घुंघराले बाल (कुंतल केशराशी), जूड़ा, वेणी (चोटी), जैसी आदि कई केश सज्जा से संबंधित शैलियां आज भी मूर्तियों, टेराकोटा, पेंटिंग और साहित्य में दिखाई देते हैं।

सांवरी शीर्षक की यह प्रदर्शनी जो कि मुख्यतः केश सज्जा पर आधारित है, के माध्यम से इलाहाबाद संग्रहालय की मृण्मूर्तियों, प्रस्तर मूर्तियों में प्रदर्शित तथा मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त तथा चन्देल काल में लोकप्रिय केश–सज्जा की विविधता पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है। इस प्रदर्शनी में जो भी प्रदर्श लगाए गए हैं वे इलाहाबाद संग्रहालय के संग्रह से हैं जो कि अहिच्छत्र, कौशाम्बी, वाराणसी, मथुरा, खजुराहो, आदि विविध स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

इसके अतिरिक्त आधुनिक चित्रकला के माध्यम से भी इस प्रदर्शनी में केश–सज्जा को दिखाया गया है जिसका एक अद्भुत उदाहरण तथा इस प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण ''सांवरी'' नामक एक चित्र है जो कि इस प्रदर्शनी का शीर्षक भी है। अंत में यह कहना समीचीन होगा कि इस तरह की प्रदर्शनियां अक्षुण्ण भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में केश–सज्जा जैसी कला शैलियों की निर्बाध निरंतरता को उचित ठहराती हैं। यह प्रदर्शनी भारतीय संस्कृति में केश–सज्जा शैलियों के प्राचीन से आधुनिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। वेदों के अनुसार, ''स्वस्थ त्वचा तथा केश एक संतुलित शरीर के प्रतिबिम्ब के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।''

SANWARI

Medium - Water Colour
Modern Painting
Bengal School of Art
Circa 20th Century C.E.
GAR No. AM-MOD-07

सांवरी

माध्यम – जल रंग
आधुनिक चित्रकला
बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट
लगभग २०वीं शती ई.
अधिग्रहण संख्या : ०७

Description :

This modern painting depicts a Santhal woman holding a Paranda (Fancy hair ribbons) in her mouth and with her hair raised upwards. Tribal women use Paranda (One of the most prominent and traditional hair accessory of Punjab) in their routine life to show their culture and values. Near the woman, a vermillion box is kept, which is used for giving and keeping vermillion to the girl at the time of marriage, and on the other side, hair pins, which are used for grooming the hair, are also scattered. This portrait of a woman adorned in tribal jewellery is a masterpiece in watercolor medium illustrated by B.N.Arya.

विवरण :

इस आधुनिक चित्र में एक संथाल महिला को अपने मुंह में परांदा (फैंसी बालों के फीते) पकड़े हुए और अपने बालों को ऊपर की ओर उठाए हुए दिखाया गया है। आदिवासी महिलाएं अपनी संस्कृति और मूल्यों को दिखाने के लिए अपने नियमित जीवन में परांदा (पंजाब की सबसे प्रमुख और पारंपरिक हेयर एक्सेसरीज में से एक) का उपयोग करती हैं। महिला के समीप ही विवाह के समय कन्या को देने तथा सिंदूर रखने हेतु प्रयोग किया जाने वाला सिंदूरदान भी रखा हुआ है तथा दूसरी तरफ बालों को संवारने में प्रयोग होने वाले हेयर पिन भी बिखरे पड़े हैं। आदिवासी आभूषणों से सुसज्जित महिला का यह चित्र बी. एन. आर्या द्वारा निर्मित जल रंग माध्यम की एक उत्कृष्ट कृति है।

TWO LADIES

Medium - Water Colour
Modern Painting
Bengal School of Art
Circa 20th Century C.E.
GAR No. AM-MOD-279

दो स्त्रियां

माध्यम - जल रंग
आधुनिक चित्रकला
बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट
लगभग २०वीं शती ई.
अधिग्रहण संख्या : २७६

Description :

In the presented picture two women are shown going somewhere. The woman walking in front is holding an umbrella in her hand and the woman walking behind has placed one of her hands on the back of the woman in front. Both the women have tied a gajra of Mogra flowers in the bun of their hair. According to Hindu mythology, Gajras were an important hair dressing accessory used by women and were a part of the Solah Shringaar.

विवरण :

प्रस्तुत चित्र में दो स्त्रियां कहीं जाते हुए दर्शाई गई हैं। आगे चल रही स्त्री ने अपने हाथ में छाता पकड़ रखा है तथा पीछे चल रही स्त्री ने आगे वाली स्त्री की पीठ पर अपना एक हाथ रखा हुआ है। दोनों ही महिलाओं ने अपने बालों के जूड़े में मोगरे के फूलों का गजरा लगा रखा है । हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार गजरा महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण सहायक केश-सज्जा उपकरण तथा सोलह श्रृंगार का एक भाग था।

PROFILE OF A LADY

Medium - Water Colour
Modern Painting
Contemporary
Circa 20th Century C.E.
GAR No. AM-MOD-686

स्त्री का पार्श्व चित्र

माध्यम – जल रंग
आधुनिक चित्रकला
समकालीन
लगभग २०वीं शती ई.
अधिग्रहण संख्या : ६८६

Description :

In this picture a woman is shown holding a mirror in her hand and looking at herself in the mirror. The woman has tied her hair into a beautiful bun and decorated it with flowers. Flowers are a symbol of love , good luck, happiness and prosperity and when a women wears the flowers on her hair it is believed that it will bring auspiciousness to her household.

विवरण :

इस चित्र में एक महिला को हाथ में दर्पण लिए हुए तथा स्वयं को दर्पण में निहारते हुए दर्शाया गया है। स्त्री ने बालों का एक सुंदर जूड़ा बनाकर उसे फूलों से सुसज्जित कर रखा है । फूल प्रेम, सौभाग्य, सुख और समृद्धि का प्रतीक हैं और जब कोई महिला अपने बालों में फूल लगाती है तो यह माना जाता है कि यह उसके घर में शुभता लाएगा।

MALE HEAD

Finding Place - Kaushambi
Terracotta
Circa 1st-2nd Century C.E.
GAR No. AM-TC-K2494

पुरुष शीर्ष

प्राप्त स्थान - कौशाम्बी
मृण्मूर्ति
लगभग प्रथम-द्वितीय शती ई.
अधिग्रहण संख्या : के २४६४

Description :

This is the head of a male obtained from Kaushambi, with limited and raised hair, in the middle part of whose forehead a hair band made of hair is visible. A high pony has been created by gathering the hair at the sides with the help of a band, which can be equated with the currently popular pony tail. Perhaps we can relate this male head hairstyle to the currently popular hair band or hair band.

विवरण :

सीमित तथा उभरे हुए केशों से युक्त यह कौशाम्बी से प्राप्त पुरुष का शीर्ष है, जिसके मस्तक के मध्य भाग में केशों से निर्मित एक केशबंध प्रदर्शित है। पार्श्व में केशों को इकट्ठा कर बैंड की सहायता से एक ऊंची पोनी बनाई गई है , जिसे वर्तमान में प्रचलित पोनी टेल से समीकृत किया जा सकता है। संभवत इस पुरुष शीर्ष की केश शैली को हम वर्तमान में प्रचलित हेयर बैंड अथवा केशबंध से संबंधित कर सकते हैं।

SHALBHANJIKA

Finding Place - Ahichchatra, Bareilly, Uttar Pradesh
Terracotta
Circa 4th-6th Century BCE
GAR No. AM-TC-2549

शालभंजिका

प्राप्त स्थान – अहिच्छत्र, बरेली, उत्तर प्रदेश
मृण्मूर्ति
लगभग चौथी–छठीं शती ई.
अधिग्रहण संख्या : २५४६

Description :

The lady is seen here standing under a tree and touching the left side breast with her left hand. She holds a branch of a tree with her right hand known as a Shalbhanjika. Her hair is shown combed back side tied with the loose knought in a snail-shaped bun. Behind the figure, there is a seen the hand of a second figure, she may have been an attendant.

विवरण :

यह महिला एक वृक्ष के नीचे खड़ी है तथा अपने वाम हस्त से अपने बायीं तरफ के स्तन को स्पर्श करती हुई प्रदर्शित है। वह अपने दाहिने हाथ से पेड़ की एक शाखा पकड़े है जिस कारण इसे शालभंजिका के रूप में जाना जाता है। उसके बालों को पीछे की तरफ करके घोंघे के आकार के जूड़े में बांधे हुए दर्शाया गया है। आकृति के पीछे एक अन्य आकृति का हाथ दिखाई दे रहा है जो कि संभवत कोई परिचारिका होगी।

HUMAN HEAD

Finding Place - Rajghat,
Varanasi, Uttar Pradesh
Terracotta
Circa 1st-3rd Century CE
GAR No. AM-TC-R2290

मानव शीर्ष

प्राप्त स्थान - राजघाट,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मृण्मूर्ति
लगभग प्रथम-तृतीय शती ई.
अधिग्रहण संख्या : आर२२९०

Description :

A beautiful terracotta human head recovered from Rajghat, Varanasi. It is painted with brown color and wears cap shaped earrings. Hairs are seen here vertically high and arranged or raised with the support of a twisted bands.

विवरण :

राजघाट, वाराणसी से प्राप्त मृण्मानव शीर्ष। इसका रंग भूरा तथा यह टोपी जैसे कर्णकुंडल पहने हुए है। केशव को ऊर्ध्वाधर रूप में सीधे तथा मोड़े हुए बंधों (Bands) की सहायता से ऊंचाई पर बांधा गया है।

SHIVA HEAD

Finding Place - Mirzapur, Uttar Pradesh
Stone Sculpture
Circa 11th Century CE
GAR No. AM-SCL-294

शिव शीर्ष

प्राप्त स्थान - मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश
प्रस्तर मूर्ति
लगभग ग्यारहवीं शती ई.
अधिग्रहण संख्या : २९४

Description :

This colossal Shiva Head has a broad face, protruding eyes and a vertical third eye on a forehead. Shiva's jata juta which is a type of hair is tied in the form of an angular crown or coronate which is called Jata Mukut. Shiva's left eyebrow is raised upwards which may possibly be related to Dancing Shiva.

विवरण :

इस विशाल शिवशीर्ष का मुख विस्तृत है, आंखे उभरी हुई तथा मस्तक पर लम्बवत त्रिनेत्र है। शिव का जटाजूट जो कि केश-शैली का एक प्रकार है, कोणाकार मुकुट के रूप में बंधा हुआ है जिसे जटा-मुकुट के नाम से जाना जाता है। शिव की बायीं भौंह ऊपर की ओर उठी हुई हैं जिसका सम्बंध सम्भवतः नृत्यरत शिव से किया जा सकता है।

BUST OF PARVATI

Finding Place - Khajuraho, Chhatarpur, Madhya Pradesh
Stone Sculpture
Circa 11th Century CE
GAR No. AM-SCL-281

आवक्ष पार्वती

प्राप्त स्थान – खजुराहो, छतरपुर, मध्य प्रदेश
प्रस्तर मूर्ति
लगभग ग्यारहवीं शती ई.
अधिग्रहण संख्या : २८१

Description :

The part below the waist is missing in this idol of Goddess Parvati. The hands filled with flowers are placed on the breasts in Anjali Mudra. The statue has a round face and is wearing elaborate earrings. The hair has been divided into two equal parts and tied into a large coiled bun. Vidyadhar is displayed on both sides of the statue with folded hands and a garland.

विवरण :

देवी पार्वती की इस प्रतिमा में कटि के नीचे का भाग उपलब्ध नही है। पुष्प से भरे हुए हाथ स्तनों पर अंजलि मुद्रा में स्थित हैं, इस प्रतिमा का मुख गोल है जिसने विस्तृत झुमके धारण किए हुए हैं । बालों को दो बराबर भागों में बांटकर बड़े कुंडलित जूड़े में बांधा गया है। प्रतिमा के दोनों तरफ विद्याधर हाथ जोड़े तथा माला लिए प्रदर्शित हैं।

FEMALE HEAD

Finding Place - Soroan, Prayagraj,
Uttar Pradesh
Stone Sculpture
Circa 9th Century CE
GAR No. AM-SCL-814

महिला शीर्ष

प्राप्त स्थान - सोरांव, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
प्रस्तर मूर्ति
लगभग नौवीं शती ई.
अधिग्रहण संख्या : ८१४

Description :

The ornate Dhammila made of triple pearl pendant on the central part of this women's head is worth seeing. According to Shilpa Shastras, Dhammila was a major type of headdress worn by women. The Dhammila displayed here is made of strings of beads spirally twisted into a semicircular shape.

विवरण :

इस महिला शीर्ष के केन्द्रीय भाग पर तिहरे मोतियों के लटकन से निर्मित अलंकृत धम्मिल दर्शनीय है। शिल्पशास्त्रों के अनुसार, धम्मिल महिलाओं द्वारा धारण किया जाने वाला शिरोवेशभूषा का एक प्रमुख प्रकार था। यहाँ प्रदर्शित धम्मिल सर्पिल रूप से, अर्द्धमंडलाकार रूप में मुड़े हुए मोतियों के धागों द्वारा निर्मित है।

© Allahabad Museum 2023

Published by :
Director,
Allahabad Museum,
Chandra Shekhar Azad Park,
Kamla Nehru Road, Prayagraj - 211002
Tel. : +91 532-2407834
Email : allahabadmuseum@rediffmail.com
Website : www.theallahabadmuseum.com

ALLAHABAD MUSEUM

(MINISTRY OF CULTURE, GOVERNMENT OF INDIA)

Kamla Nehru Road, Chandra Shekhar Azad Park, Civil Lines, Prayagraj - 211002

Email : allahabadmuseum@rediffmail.com | Website : www.theallahabadmuseum.com

Twitter / @allahabadmuseum | Facebook / : @allahabadmuseum

Tel. : 0532-2408237, 2407409, 2408690